6

सामाजिक समूह

[SOCIAL GROUPS]

(13) **प्राथमिक समूह** व्यक्ति के सामाजिक स्वभाव व आदर्शों के निर्माण में आधारभूत होते हैं। इसी कारण श्री कूले ने प्राथमिक समूह को मानव-स्वभाव का निर्माण-स्थल (the nursery of human nature) कहा है। **द्वितीयक समूह** व्यक्ति के व्यक्तित्व का विशेषीकरण करते हैं।

(14) **प्राथमिक समूह** की सदस्यता को लोग अपने जीवन का एक अनिवार्य अंग समझकर स्वयं खुशी से स्वीकार कर लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवनकाल में परिवार या परिवारों, खेल के साथियों के समूहों, पड़ोस आदि का सदस्य अवश्य होता है। **द्वितीयक समूहों** की सदस्यता कोई विशेष आवश्यकता पड़ने पर ही ग्रहण की जाती है और इसी प्रकार इच्छानुसार समूह-विशेष से अपना सम्बन्ध तोड़ा या जोड़ा जा सकता है।

सामाजिक समूहों का महत्व (Importance of Social Groups)

सामाजिक समूह विश्वव्यापी है और वह भी इस अर्थ में कि सामान्यत: कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं रहता है। इस सम्बन्ध में **श्री अरस्तू** (Aristotle) के कथन को उद्धृत किया जा सकता है। आपने कहा है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे दूसरे व्यक्तियों के साहचर्य (company) की आवश्यकता होती है। कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण संसार को भी अपना कहने से इन्कार कर देगा यदि उसे मालूम हो जाय कि उसे संसार में अकेले ही रहना होगा। इसका कारण यह है कि मनुष्य स्वभाव से ही दूसरों के साथ रहना पसन्द करता है। इस कारण सुखी मनुष्य भी दूसरों के साथ ही रहता है। अरस्तु महोदय ने यह भी कहा है कि सामान्य जीवन व्यतीत करने में असमर्थ व्यक्ति या तो मनुष्यत्व के निम्न स्तर में है या उच्च स्तर में अर्थात् या तो वह दैत्य है या देवता। पशु-पक्षियों या कीड़े-मकोड़ों की सन्तानों को अपने जीवन धारण के लिए अपने माता-पिता या समाज पर अधिक निर्भर नहीं रहना पड़ता परन्तु मानव-सन्तान को अपने पालन-पोषण, सुरक्षा, आराम, शिक्षा आदि के लिए या संक्षेप में, सामाजिक प्राणी के रूप में अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए विभिन्न सामाजिक समूहों पर निर्भर रहना पड़ता है। मानव के सामाजिक व्यक्तित्व का प्रारम्भ 'परिवार' नामक समूह से होता है तथा अन्य समूहों के मध्य उसके व्यक्तित्व में परिपक्वता आती है। यही है—सामाजिक समूहों की आवश्यकता व महत्व की छोटी-सी कहानी।

परीक्षोपयोगी प्रश्न

समूहों के सदस्यों में सम्बन्ध दूर का, अप्रत्यक्ष व अवैयक्तिक (impersonal) होता है तथा ... सहानुभूति, सद्भावना, प्रेम व प्रीति का नितान्त अभाव होता है।

(3) प्राथमिक समूहों के सदस्यों के पारस्परिक सम्बन्धों की अवधि लम्बी होती है क्योंकि ... प्रेम, सहयोग, सद्भावना आदि आन्तरिक गुणों पर निर्भर होता है और ये गुण स्वतः ही सम्बन्ध को ... स्थायित्व प्रदान करते हैं। इसके विपरीत द्वितीयक समूहों के सदस्यों का पारस्परिक सम्बन्ध 'छुओ और जाओ टाइप' (touch and go type) का होता है जिसके कारण सम्बन्ध बहुत कम स्थायी होते हैं।

(4) प्राथमिक समूह कभी भी कोई विशेष हित या स्वार्थ की पूर्ति के लिए नहीं होते। इसमें प्रत्येक ... पूर्ण रूप में सम्पूर्ण हृदय से भाग लेता है परन्तु द्वितीयक समूहों में ऐसा नहीं होता। वे तो 'विशेष ...' (Special Interest groups) होते हैं; उनके कार्यों में विशेषीकरण होता है और उन्हें एक विशेष ... के लिए बनाया जाता है।

(5) प्राथमिक समूह के सदस्यों का सम्बन्ध प्रत्यक्ष होता है और उनमें शारीरिक निकटता ... कारण वे एक-दूसरे से प्रायः रोज मिलते हैं, बात-चीत व हँसी-मजाक करते हैं तथा प्रत्यक्ष रूप में ... भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। इसके विपरीत द्वितीयक समूहों में सदस्यों के बीच अप्रत्यक्ष ... हैं और उनमें शारीरिक दूरी भी पाई जाती है। इस सम्बन्ध को अप्रत्यक्ष (indirect) कहा जाता है क्योंकि ... इसे डाकखाना या पत्र, टेलीफोन, टेलीग्राम, रेडियो, टेलीविजन, चलचित्रों, समाचार-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं ... लम्बी दूरी तय करने वाले आदान-प्रदान के अप्रत्यक्ष साधनों (long distance indirect ... communication) के माध्यम से स्थापित करते हैं।

(6) प्राथमिक समूह स्वाभाविक होते हैं, इसी कारण इसके सदस्यों के आपसी सम्बन्ध भी ... स्वाभाविक रूप से स्थापित होते हैं। उदाहरणार्थ, किसी व्यक्ति को अपने मित्र के रूप में जबरदस्ती या ... के कारण ग्रहण नहीं करते बल्कि यह सम्बन्ध अपने-आप बन जाता है परन्तु द्वितीयक समूहों में ऐसा ... होती क्योंकि वे तो अधिक जानबूझकर तथा चैतन्य रूप से बनाये गये समूह होते हैं। इसी कारण इनमें स्वाभाविकता के स्थान पर दिखावा, बनावट तथा स्वार्थ होता है।

(7) प्राथमिक समूह का कार्य-क्षेत्र सीमित और कम होता है, द्वितीयक समूहों का कार्य-क्षेत्र ... बड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए होता है।

(8) प्राथमिक समूह के सदस्यों का दायित्व (liability) असीमित होता है और इसका कोई ... होता। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति अपने माता-पिता, भाई-बहन या मित्र के लिए कितना त्याग करे ... कोई निश्चित सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। इसके विपरीत द्वितीयक समूहों में सदस्यों का दायित्व ... होता है और कुछ निश्चित शर्तों के अनुसार नियमित (regulated) होता है।

(9) प्राथमिक समूह अनौपचारिक (informal) होते हैं और अपने सदस्यों पर किसी तरह की ... या कानून नहीं लादते। इनके विपरीत द्वितीयक समूह औपचारिक (formal) होते हैं और अपने ... अनेक प्रकार की शर्तों, नियमों, कानूनों और कार्यविधियों को लादते हैं। यही नहीं, उन्हें न मानने पर या ... को तोड़ने पर अपराधी-सदस्य को समूह-विशेष से निकाल तक दिया जा सकता है।

(10) प्राथमिक समूह अपने सदस्यों पर तिरस्कार, निन्दा, पंचायत, व्यक्तिगत प्रभाव आदि साधनों ... नियन्त्रण रखता है क्योंकि हर सदस्य एक-दूसरे को घनिष्ठ तथा व्यक्तिगत रूप से जानता है। इसके ... द्वितीयक समूह को अपने सदस्यों के व्यवहारों पर नियन्त्रण रखने के लिए कानून, पुलिस, कोर्ट, ... द्वितीयक साधनों की सहायता लेनी पड़ती है।

(11) प्राथमिक समूह सार्वभौमिक (universal) होते हैं। ये संसार के प्रत्येक समाज में और ... विकास के प्रत्येक स्तर (stage) पर पाये जाते हैं। इसके विपरीत सभी द्वितीयक समूह सार्वभौमिक ... उदाहरण के लिए, साम्यवादी राज्य प्रत्येक देश में नहीं हैं।

(12) प्राथमिक समूह संख्या में इने-गिने होते हैं। श्री कूले ने प्रमुख रूप से परिवारों, बच्चों के ... साथियों के समूहों तथा आस-पड़ोस को प्राथमिक समूह ... में असंख्य ...

(13) प्राथमिक ...
श्री कूले ने प्राथमिक ...
कहा है। द्वितीयक समू...

(14) प्राथमिक ...
स्वीकार कर लेते हैं। प्र...
आदि का सदस्य अवश्...
जाती है और इसी प्रक...

सामाजिक समूहों ...

सामाजिक समू...
है। इस सम्बन्ध में श्री...
एक सामाजिक प्राणी...
सम्पूर्ण संसार को भी...
होगा। इसका कारण...
भी दूसरों के साथ ही...
या तो मनुष्यत्व के...
कीड़े-मकोड़ों की...
रहना पड़ता परन्तु...
सामाजिक प्राणी के...
है। मानव के सामा...
व्यक्तित्व में परिपक्व...

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न...

1. समूह क्या है...
   What is gr...
   [इसके अन्त...
   है।]
2. सामाजिक स...
   Define so...
   [इसमें सामा...
3. सामाजिक ...
   Define so...
   [इसमें साम...
4. प्राथमिक स...
   Define p...
   [इसमें प्राथ...
   करना होग...
5. सामाजिक ...
   What do...
   group.
   [इसमें सर्व...
   अर्थ को स...

जिन्सबर्ग के अनुसार- ''समाजशास्त्र मानवीय अन्तः क्रियाओं और अन्तः संबंधों, उनकी दशाओं परिर्णाम का अध्ययन है।''

मैक्स वेबर के अनुसार-''समाजशास्त्र वह विज्ञान है, जो सामाजिक क्रिया का व्याख्यात्मक बोध कराने का प्रयत्न करता हैं, जिससे से इसकी'' गतिविधि तथा परिणाओं की कारण सहित व्याख्या प्रस्तुत की जा सके।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र को समाज का विज्ञान, सामाजिक सम्बन्धों का विज्ञान, सामाजिक घटनाओं का विज्ञान, सामाजिक समूहों का विज्ञान, सामाजिक अन्तः-क्रियाओं का विज्ञान तथा सामाजिक क्रियाओं का विज्ञान कहकर परिभाषित किया है। उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र सम्पूर्ण समाज का एक समग्र इकाई रूप में सामाजिक संरचना, सामाजिक समूहों, सामाजिक सम्बन्धों, अन्तः क्रियाओं तथा उनमें निहित घटनाओं, व्यवहार एवं कार्यों का अध्ययन है।

विषय-क्षेत्र- (Scope)-सामाजशास्त्र का विषय निर्धारित करना एक कठिन कार्य है, क्योंकि यह एक विकासशील विज्ञान है। प्रो॰ ईक्लस ने इसकी चर्चा करते हुए कहा है कि ''समाजशास्त्र परिर्वतनशील समाज का अध्ययन करता है, इसलिए समाजशास्त्र के अध्ययन की न तो कोई सीमा निर्धारित की जा सकती है और न ही इसके अध्ययन-क्षेत्र को बिल्कुल स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जा सकता है।'' इसके विषय-क्षेत्र के सम्बन्ध में समाजशास्त्रियों के मतों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- (1) स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal School) (2) समन्वयात्मक सम्प्रदाय (Synthetic School)

1. स्वरूपात्मक सम्प्रदाय- इस सम्प्रदाय के प्रर्वतक जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल हैं। मैक्स वेवर, टानिज, वॉन विजे, वीरकान्त, स्माल आदि ने भी इसी सम्प्रदाय का समर्थन किया है। यह सम्प्रदाय सामाजिक संबंधों के विशिष्ट स्वरूपा के अध्ययन पर ही जोर देता है और समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान मानता है। इस सम्प्रदाय से संबंधित प्रमुख विचारकों के विचार इस प्रकार हैं-

जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल का कहना है कि प्रत्येक वस्तु के दो पहलू होते हैं, जिसे स्वरूप (From) तथा अन्तर्वस्तु (Content) कहा जाता है। वस्तु के बाह्य रूप को स्वरूप तथा वस्तु के आंतरिक सार को अन्तर्वस्तु कहा जाता है। सिमेल के अनुसार सामाजिक सम्बन्धों के साथ भी यही बात है, अर्थात् वस्तुओं के समान ही सामाजिक सम्बन्ध के भी स्वरूप और अन्तर्वस्तु होते हैं। इसके अनुसार समाजशास्त्र में केवल सामाजिक सम्बन्धों और सामाजिक अन्तःक्रियाओं के स्वरूपों का वर्णन,वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है, अन्तर्वस्तु का नहीं। इसलिए समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है।

वॉन वीज ने भी समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में ही प्रस्तुत किया है। इनका कहना है कि समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है जो मानवीय सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन करता है और यही उसका विशिष्ट क्षेत्र है। इन्होंने सामाजिक सम्बन्धों के 650 स्वरूपों का उल्लेख किया और यह विचार दिया कि समाजशास्त्र इन्हीं का अध्ययन करता है।

मैक्स वेबर ने भी समाजशास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान ही स्वीकार किया है। इनका कहना है कि समाजशास्त्र का मुख्य कार्य केवल सामाजिक क्रिया को समझना और उसकी व्याख्या करना है। मानव जीवन में अनेक तरह की क्रियाएँ-प्रतिक्रियाएँ होती रहती हैं। लेकिन वे सभी राजनीतिक

SOCIOLOGY - CORE SEM-I PAPER-IST

Q. 1. Define sociology and discuss its scope.
(समाजशास्त्र की परिभाषा दें तथा इसके विषय-क्षेत्र की विवेचना करें।)
Or, What is sociology? Discuss its scope.
अथवा, (समाजशास्त्र क्या हैं। इसके विषय-क्षेत्र की विवेचना करें)

Ans. समाजशास्त्र एक प्रमुख सामाजिक विज्ञान के रूप में पिछली शताब्दी में विकसित हुआ। इसलिए अन्य सामाजिक विज्ञानों की तुलना में यह नवीन विज्ञान है। इस नवीन विज्ञान को जन्म देने का श्रेय फांसीसी विचारक अगस्त काम्ट को है। इन्होंने ही सबसे पहले 1838 ई. में इस नवीन शास्त्र को सामाजशास्त्र नाम दिया। इस कारण इन्हें समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है।

अगस्त काम्ट ने लैटिन शब्द' Socius' और ग्रीक शब्द 'Logus' के योग से Sociology शब्द का आविष्कार किया, जिसका शाब्दिक अर्थ है समाज का विज्ञान। चूँकि इस शब्द इस शब्द का निर्माण अगस्त काम्ट ने दो भाषाओं के शब्दों को मिलाकर किया है। इस कारण राबर्ट बीरस्टीड तथा जे॰ एस॰ मिल ने इस शब्द के प्रयोग पर आपत्ति की। किंतु इंग्लैंड के समाजशास्त्री हर्बट स्पेन्सर ने इस शब्द को उचित ठहराया और समाज के विज्ञान के लिए समाजशास्त्र का प्रयोग विश्वव्यापी हो गया।

परिभाषा (Definition) समाजशास्त्र की अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकी है। इसका कारण यह है कि यह विकास की प्रक्रिया से गूँज रहा है और इसका अध्ययन वस्तु अर्थात समाज स्वयं परिवर्तनशील है। आरंभ से ही समाजशास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से समाजशास्त्र को परिभाषित किया है, जिसकी चर्चा इस प्रकार की जा सकती है-

वार्ड के अनुसार- "समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है।"

ओहम के अनुसार- "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज का अध्ययन करता है।"

जिसबर्ट के अनुसार- 'समाजशास्त्र सामान्यतया समाज विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता है।

मेकाइवर तथा पेज के अनुसार- "समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के विषय में अध्ययन ., संबंधों के इसी जाल को हम समाज कहते हैं।"

क्यूबर के अनुसार-"समाजशास्त्र का मानव संबंधों के वैज्ञानिक ज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

जार्ज सिमेल के अनुसार-" समाजशास्त्र मानवीय अन्त:सबंधों के स्वरूपों का विज्ञान है।"

सोरोकिन के अनुसार-"समाजशास्त्र सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाओं के सामान्य स्वरूपों, प्रकारों और विभिन्न प्रकार के अंत:संबंधों का सामान्य विज्ञान है।"

जानसन के अनुसार-"समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है- सामाजिक समूह सामाजिक अन्त:क्रियाओ की ही एक व्यवस्था है।"

गिलिन तथा गिलिन के अनुसार- "व्यापक अर्थ में समाजशास्त्र को व्यक्तियों के एक-दूसरे के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अन्त: क्रियाओं का अध्ययन कहा जा सकता है।"

नहीं होतीं। इन्होंने केवल उन्हीं क्रियाओं को सामाजिक क्रिया माना है जो समाज के अन्य सदस्यों से प्रभावित होती है तथा अर्थपूर्ण होती है। समाजशास्त्र का काम इन्हीं सामाजिक क्रियाओं को समझना है। इसलिए यह एक विशिष्ट विज्ञान है।

2. **समन्वयात्मक सम्प्रदाय**- इनका समर्थन दुर्खीम, हाबहाउस, वार्ड, जिन्सबर्ग, सोरोकिन आदि ने किया है। इन लोगों ने इस मत का खण्डन किया कि समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है और यह विचार दिया कि सम्पूर्ण समाज की सभी सामान्य विशेषताओं का अध्ययन समाजशास्त्र करता है। इसलिए यह एक सामान्य विज्ञान है।

दर्खीम के अनुसार समाजशास्त्र का प्रमुख कार्य सामाजिक तथ्यों का अध्ययन है। इस संदर्भ में इनका कहना है कि समाज का स्थान सबसे उच्च होता है। समाज की मान्यताएँ मूल्य, शक्ति आदि व्यक्ति को हमेशा प्रभावित करती है। इसलिए दुर्खीम ने समाजशास्त्र को सामूहिक प्रतिनिधियों का विज्ञान कहा है। इन्हीं सामूहिक प्रतिनिधियों या चेतना या नियम के रूप में समाज के व्यवहारों का न केवल निर्धारण, बल्कि नियंत्रण भी किया जाता है इसलिए समाजशास्त्र का मुख्य काम इन सामूहिक प्रतिनिधियों या सामूहिक चेतना का अध्ययन करना है। यही अध्ययन समाजशास्त्र को सामान्य विज्ञान के रूप में स्थापित करता है।

हॉबाहाउस भी समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान मानते हैं। इनके अनुसार समाज विज्ञान विभिन्न शाखाओं के प्रमुख सिद्धांतों के बीच पाये जाने वाले सामान्य तत्वों का पता लगाना ही समाजशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य है। इससे विभिन्न विज्ञानों के बीच समन्वय भी स्थापित होता है।

सोरोकिन का भी कहना है कि प्रत्येक मानव व्यवहार तथा सामाजिक क्रिया में सामाजिक तत्व विद्यमान होते हैं। उन्हीं सामान्य सामाजिक तत्वों का अध्ययन समाजशास्त्र करता है। इसीलिए यह एक सामान्य सामाजिक विज्ञान है।

उपरोक्त व्याख्याओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र के विषय-क्षेत्र के सम्बन्ध में स्वरूपात्मक तथा समन्वयात्मक दोनों सम्प्रदायों का विचार एकांगी है। समाजशास्त्र न तो पूर्णतः विशिष्ट विज्ञान है और न पूर्णतः सामान्य विज्ञान, बल्कि यह दोनों का समन्वय है। इस सम्बन्ध में जिन्सबर्ग ने ठीक ही कहा है कि समाजशास्त्र विशिष्ट एवं सामान्य विज्ञान का मिलन है।

Q.2 Define social structure and discuss its elements.

Ans. मनुष्य का सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण संगठन परिवार है। यह एक स्वाभाविक संस्था भी है। मनुष्य का जन्म परिवार में होता है और परिवार में ही रहकर वह अपने जीवन को विकसित करता है। परिवार में ही रहकर मनुष्य सभी तरह के नागरिक गुणों को सीखता है। इसी कारण परिवार को नागरिक जीवन का प्रथम पाठशाला कहा जाता है। पारिवारिक जीवन से ही सहयोगपूर्ण सामाजिक जीवन का आरम्भ होता है। साधारण अर्थ में परिवार वह संस्था है जिसका निर्माण पारस्परिक सुख और सहायता के लिए पति-पत्नी और उसकी सन्तान को मिलाकर होता है। दूसरे शब्दों में, परिवार का अर्थ पति-पत्नी और उनके बच्चों से है।

परिवार की परिभाषा विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न तरह से दी गयी है।

1. **मैकाइवर का** कहना है-''परिवार एक ऐसा समूह है, जो यौन-सम्बन्ध पर आधारित है, जो यथेष्ट रूप से छोटा और स्थायी होता है और जिसमें सन्तान की उत्पत्ति और पालन-पोषण की व्यवस्था पायी जाती है।''

2. **अरस्तू के अनुसार**-''परिवार प्रकृति द्वारा मनुष्य के प्रतिदिन की आवश्यंकताओं की पूर्ति के लिए स्थापित संघ है।''

3. **क्लेयर के अनुसार**-'' परिवार सम्बन्धों का वह व्यवंस्था है जो माता-पिता और उनके बच्चों में पायी जाती है।''

4. **लॉक के अनुसार**-''परिवार व्यक्तियों का वह समूह है, जो विवाह रक्त-सम्बन्ध या गोद लेने के बन्धनों से आपस में बँधे हुए हैं, जो एक घर गृहस्थी का निर्माण करते हैं, जहाँ पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री और भाई-बहन सब अपने सामाजिक कार्यों को करते हुए एक-दूसरे से सम्बन्ध रखते हुए एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार वे एक सामान्य संस्कृति का निर्माण तथा पालन करते हैं।

5. **मजूमदार** के अनुसार -'' परिवार एक ही छत के नीचे रहने वाले ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो अपने मूल अथवा रक्त-सम्बन्धी बन्धन में आबद्ध होता है तथा एक ऐसी सामान्य चेतना से पूर्ण होता है जिसका स्थान, हित और पारम्परिक कृतज्ञता सम्बन्धी अन्योन्याश्रित है।''

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि परिवार के मुख्य आधार पर स्त्री-पुरुष एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित करते हैं और सन्तान की उत्पत्ति करते हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि पति-पत्नी और बच्चा सहित जो समूहा पैदा होता है उसे परिवार की संज्ञा दी जाती है। इन परिभाषाओं से ही पारिवारिक विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती हैं। परिवार की विशेषताओं का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है-

1. **पति-पत्नी का सम्बन्ध**- परिवार के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि पुरुष और स्त्री का सम्बन्ध पति-पत्नी के रूप में हो। काम-वासना की पूर्ति और सन्तानोत्पत्ति की भावना से जब पुरुष और स्त्री का पति-पत्नी के रूप में मिलना होगा, तभी परिवार का निर्माण होगा, अन्यथा नहीं।

2. **एक वैवाहिक व्यवस्था**- स्त्री-पुरुष के बीच पति-पत्नी का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए वैवाहिक संबंध होना आवश्यक है। बिना वैवाहिक सम्बन्ध के स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध परिवार का आधार नहीं बन सकता है। विवाह ही पति-पत्नी के सम्बन्ध को स्थायी बनाता है।

3. **नाम एवं वंश गणना का प्रबन्ध**- प्रत्येक परिवार की अपनी परम्परा होती है। ऐसी परम्परा के अनुसार एवं उत्तराधिकार को निश्चित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, परिवार के लिए नाम और वंश गणना प्रणाली आवश्यक है। इसी आधार पर परिवार पितृसत्तात्मक हो सकते हैं।

हा है।

Q.3. Define family. Discuss its different types.

(परिवार की परिभाषा दें। इसके प्रमुख प्रकारों की चर्चा करें।)

3. **आकार के आधार पर**- आकार के आधार पर परिवार के दो भेद किये जाते हैं-व्यक्तिगत और संयुक्त परिवार। व्यक्तिगत परिवार में सिर्फ पति-पत्नी और उनके बच्चे होते हैं। संयुक्त परिवार में उनके अतिरिक्त चाचा, भाई-भतीजे, दादा-दादी भी साथ रहते हैं। इनका वर्णन निम्नलिखित रूप में है-

(i) **व्यक्तिगत परिवार**- जिस परिवार में सिर्फ पति-पत्नी और उनके बच्चे रहते हैं, व्यक्तिगत परिवार कहा जाता है। इस तरह परिवार अधिकतर औद्योगिक देशों में पाये जाते हैं।

(ii) **संयुक्त परिवार**- संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय सामाजिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता हैं संयुक्त परिवार में दो-तीन पीढ़ियों के सदस्य सम्मिलित रहते हैं। इनमें माता-पिता, चाचा-चाची,भाई-भतीजे, चचेरे भाई-बहन इत्यादि सभी साथ ही रहते हैं। कृषि प्रधान देशों में संयुक्त परिवार की प्रथा ही आधिक देखने को मिलते हैं। भारत भी एक कृषि प्रधान देश है। अत: यहाँ भी यह प्रथा विशेष रूप से पायी जाती है।

से होती हैं। ...गणना पिता के नाम से और मातृसत्तात्मक परिवार में माता के नाम

4. **एक निवास-स्थान**- प्रत्येक परिवार का एक निवास-स्थान भी होता है। एक निवास स्थान के अभाव में परिवार खानाबदोश की तरह इधर-उधर घूमता रहेगा और स्थायी व्यवस्था नहीं हो पाएगी। अतः एक निश्चित निवास-स्थान परिवार की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता मानी जायेगी। परिवार के कुछ सदस्य भले ही जीविकोपार्जन के उद्देश्य से बाहर रह सकते हैं, परन्तु उनका एक स्थायी निवास-स्थान आवश्यक होता है।

5. **आर्थिक प्रबन्ध** - प्रत्येक परिवार की कुछ अपनी स्वतन्त्र आर्थिक व्यवस्था होती है, जिससे परिवार के सभी लोंगों को आवश्यकताओं की पूर्त्ति हो सके। परिवार को चलाने के लिए कुछ आर्थिक का होना बहुत ही आवश्यक है।

परिवार के प्रकार- परिवार कई प्रकार के होते हैं जिनका वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर किया जाता है-

1. **वंश के आधार पर**- वंश के आधार पर परिवार को दो भागों में बाँटा जाता है- (i) पैतृक परिवार (patriarchal family) और (ii) मातृक परिवार (Matriarchal family)। दोनों पर अलग-अलग विचार करना उचित होगा।

(i) **पैतृक परिवार**- पैतृक परिवार वैसे परिवार को कहा जाता है, जिसमें पुरुष की प्रधानता होती है। परिवार के सबसे वयोवृद्ध पुरुष को ही परिवार का प्रधान माना जाता है जिसके आदेश का पालन परिवार के सदस्य करते हैं। वंश और उत्तराधिकारी पिता के नाम पर चलता है। सर हेनरी मेन का कहना है कि परिवार मूल रूप में पैतृक ही थे। यद्यपि विद्वानों में इस बात को लेकर मतभेद है कि पैतृक परिवार और मातृक परिवार में किसका स्थान ऊँचा है, फिर भी यह मानना पड़ेगा कि विश्व की अधिकांश जातियों में पैतृक परिवार को प्रणाली ही अधिक प्रचलित है।

(ii) **मातृक परिवार**- मातृक परिवार वैसे परिवार को कहा जाता है जिसमें माता की ही प्रधानता होती हैं। माता ही परिवार की गृहस्वामिनी होती है जिसकी आदेशों को परिवार के सभी सदस्यों को मानना पड़ता है। माता के नाम से ही वंश और उत्तराधिकारी चलता है। मैक लेनन के अनुसार प्रारम्भिक काल में परिवार का रूप मातृक ही था। आज भी इस तरह के परिवार प्रायः सभी देशों में मिलते हैं। फिर भी, इस प्रकार के परिवार की संख्या कम होती जा रही है।

2. **विवाह पद्धति के आधार पर**- विवाह पद्धति के आधार पर परिवार का वर्गीकरण किया जाता है। इसके अनुसार परिवार तीन तरह के होते हैं-

(i) **एक विवाह परिवार**- जिस परिवार में एक पति और एक पत्नी होती है उस परिवार को एक विवाह परिवार कहते हैं। आजकल एक विवाह वाले परिवार की ही प्रधानता है। आधुनिक युग में तो एक से अधिक विवाह पर धार्मिक और कानूनी दोनों प्रतिबन्ध लगे हुए हैं।

(ii) **बहु-पत्नी परिवार**- इस तरह के परिवार में एक पुरुष की कई पत्नियाँ होती हैं। सभी पत्नियों से उत्पन्न बच्चे उसी परिवार के सदस्य माने जाते हैं। मुसलमानों में इस तरह के परिवार के अधिकतर उदाहरण मिलते हैं।

(iii) **बहु-पति परिवार**- इस तरह के परिवार के एक स्त्री के कई पति होते हैं। सभी पतियों से स्त्री अपना सम्बन्ध रखती है। इस तरह के परिवार के उदाहरण प्राचीन भारत में मिलते थे।

के अन्दर ही इसका निर्माण तथा विकास होता है। इसलिए इसमें सभी प्रकार के सामाजिक गुण पाये जाते हैं।

(4) **संस्कृति में आवश्यकता की पूर्त्ति का गुण है**- व्यक्ति की सामाजिक तथा जैविकीय आवश्यकताओं की पूर्त्ति संस्कृति करती है। मैलिनोवस्की ने संस्कृति की इसी विशेषता को इसके कार्यात्मक पक्ष की संज्ञा दी है।

(5) **संस्कृति आदर्शात्मक होती है**- संस्कृति का निर्माण मनुष्य की सामाजिक आदतों और व्यवहार के ढंग से होता है। मनुष्य समाज या समूह के आदर्श नियमों के अनुसार ही व्यवहार करता है। इसलिए संस्कृति भी आदर्श बन जाती है। और प्रत्येक व्यक्ति या समूह अपनी संस्कृति को आदर्श रूप में स्वीकार करता है।

(6) **संस्कृति में अनुकूलन का गुण पाया जाता है**- भौगोलिक तथा सामाजिक पर्यावरण के अनुसार संस्कृति भी बदल जाती है। इस प्रकार इसमें पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने की शक्ति होती है।

(7) **प्रत्येक समाज की संस्कृति पृथक होती है**- प्रत्येक समाज की सामाजिक तथा भौगोलिक दशाएँ एक सामान नहीं होतीं। इसीलिए व्यक्ति के व्यवहार और आचरण भी अलग-अलग होते हैं। फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों का निर्माण होता है। इस प्रकार समाज की अपनी अलग संस्कृति होती है।

(8) संस्कृति संगठित होती है- संस्कृति समाज की कार्यविधियाँ, कल्पनाओं, विचारों आदि का संगठित रूप है। इसलिए यह संगठित होती हैं।

(9) **संस्कृति अधिवैयक्तिक एवं अधिसावयवी होती है**- संस्कृति का निर्माण किसी एक व्यक्ति के व्यवहार से नहीं होता, बल्कि व्यक्तियों के सामूहिक व्यवहार से होता है इसलिए संस्कृति को अधिवैयक्तिक कहा जाता है। संस्कृति अधिसावयवी भी है, क्योंकि इसके तत्त्वों को समाज के द्वारा अर्थ प्रदान किया जाता है।

नहीं होता। कठिन परिस्थिति आने पर पति-पत्नी एक-दूसरे की निन्दा करने लगते हैं और उनके बीच तलाक की नौबत आ जाती है।

11. **प्रतिकूल दशाएँ**- प्रतिकूल दशाएँ, जैसे, लम्बी बीमारी, नौकरी छूट जाना, बेकारी आदि के कारण व्यक्ति की मानसिक शान्ति समाप्त हो जाती है। वह अर्थ के उपार्जन में इतना उलझा रहता है कि परिवार का उसे जरा भी ख्याल नहीं रहता। इसके चलते परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्ध ठीक नहीं रहते। फलस्वरूप परिवार विघटित हो जाता है।

Q.5. Define culture and discuss its main characteristics.

(संस्कृति की परिभाषा दें तथा इसकी मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें।)

Ans. संस्कृति शब्द 'संस्कार' से बना है, जिसका अर्थ परिष्कृत करना है। इस प्रकार शाब्दिक रूप से संस्कृति का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो व्यक्ति तथा समाज के आचरण और विचार को परिष्कृत कर सके। परन्तु यह संस्कृति की बहुत सीमित परिभाषा है। समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र में इसकी परिभाषा व्यापक रूप से दी गई है।

परिभाषा (Definition)- संस्कृति की परिभाषा के सम्बन्ध में विद्वानों के बीच मतभेद पाया जाता है। इसकी कुछ मुख्य परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

टायलर के अनुसार -''संस्कृति वह जटिल सम्पूर्णता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा, और इसी तरह की अन्य क्षमताओं तथा आदतों का समावेश हैं, जो मानव समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।''

मेकाइवर तथा **पेज** के अनुसार-'' सांस्कृति हमारे रहने और सोचने के ढंगों, कार्य कलापों, कला, साहित्य, धर्म मनोरंजन एवं आनन्द में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।''

लेसली व्याइट के अनुसार-'' सांस्कृति घटनाओं का वह संगठन है, जिसमें कार्यों (व्यवहार प्रतिमानों) पदार्थों (औजार तथा उससे निर्मित वस्तुएँ), विचार (विश्वास और ज्ञान) तथा भावनाओं (मनोवृति और मूल्यों) का समावेश होता है जो प्रतीकों के उपयोग पर निर्भर है।''

मैलिनोवस्की के अनुसार-''संस्कृति में वे सभी पदार्थ, उपकरण तथा शारीरिक और मानसिक आदतें सम्मिलित रहती हैं, जो मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि संस्कृति की परिभाषा के सम्बन्ध में विचारकों के बीच मतभेद पाया जाता है और इसकी कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है।

सांस्कृति की विशेषताएँ(Characteristics of Culture)- सांस्कृति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(1) **संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है**- व्यक्तियों के सीखे हुए व्यवहार को संस्कृति कहा जाता है। व्यक्ति समाज में रहकर बहुत कुछ सीखता है और उसी के अनुसार व्यवहार करता है। मनुष्य का अनुभव और अधिकार, जो समाज द्वारा स्वीकृत होता है, वह संस्कृति होता है, वह संस्कृति का अंग बन जाता है।

(2) **संस्कृति में हस्तांतरण का गुण पाया जाता है**- संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। इससे यह स्पष्ट है कि इसमें हस्तांतरण का गुण पाया जाता है।

(3) **संस्कृति में सामाजिकता का गुण होता है**- मानवीय अन्तःक्रियाओं के अनुसार संस्कृति का विकास होता है। इस कारण इसे एक सामाजिक घटना की संज्ञा दी गई है। समाज

Q.8. Critically discuss the evolutionary theoury of social change.

(सामाजिक परिवर्तन के उद्विकासीय सिद्धान्त की आलोचनात्मक विवेचना करें)

Ans. सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या सामाजिक विचारकों ने अपने-अपने ढंग से की है। फलस्वरूप सामाजिक परिवर्तन के अनेक सिद्धान्त विकसित हुए। सामाजशास्त्रीय सिद्धान्त की प्रकृति के अनुसार इसे चार भागों में बाँटा जाता है- (i) उद्विकासीय सिद्धान्त (ii) चक्रीय सिद्धान्त (3) संघर्षीय सिद्धान्त तथा (4) प्रकार्यात्मक सिद्धान्त

जहाँ तक सामाजिक परिवर्तन के उद्विकासीय सिद्धान्त का प्रश्न है, इसके अनुसार सामाजिक परिवर्तन एक निश्चित दिशा में परिवर्तन है जो सरल से जटिल की ओर होता है। अगस्त कास्ट, मर्गन, स्पेन्सर आदि विचारकों ने उद्विकासीय सिद्धान्त का समर्थन किया और सामाजिक परिवर्तन की चर्चा की।

अगस्त काम्ट का कहना है कि मानव का बौद्धिक विकास तीन चरणों से गुजरता है। वे चरण निम्नलिखित हैं-

1. **धार्मिक स्तर**- इस स्तर में मनुष्य प्रत्येक घटना के पीछे अलौकिक शक्ति का हाथ मानता है। काम्ट ने इस स्तर को तीन उपस्तरों में विभाजित किया। वे हैं-

(क) वस्तु पूजा- इस स्तर में मनुष्य में प्रत्येक वस्तु में जीवन की कल्पना की, चाहे वह जीव हो या निर्जीव।

(ख) बहुदेववाद- इस स्तर में विभिन्न देवी-देवताओं की कल्पना की गयी और सम्बन्ध विभिन्न प्रकार की सम्बद्ध घटनाओं से माना गया।

(ग) एकेश्वरवाद- इस स्तर में बहुत देवी-देवताओं में विश्वास न कर एक ही ईश्वर में विश्वास करने लगे।

2. **तात्विक या अमूर्त स्तर** - काम्ट के अनुसार इस अवस्था में मनुष्य की विचार शक्ति में थोड़ा विकास आया। उसने यह जानने का प्रयास किया कि इस समुचे विश्व के पीछे अन्तिम सत्य क्या है। इस प्रकार इस अवस्था में धर्म की प्रधानता नहीं रही। काम्ट के अनुसार यह महत्वपूर्ण अवस्था थी जो अन्ततः प्रत्यक्षवादी अवस्था लाने में सहायक हुई।

3. **प्रत्यक्षवादी स्तर**- यह समाज एवं मानव मस्तिष्क के उद्‌विकास का अन्तिम चरण है। इसमें घटना का विश्लेषण, अवलोकन, निरीक्षण एवं प्रयोग वैज्ञानिक तुलना के आधार पर होने लगता है। समाज में बौद्धिक, भौतिक तथा नैतिक शक्तियों का अच्छा समन्वय देखने को मिलता है। इस स्तर में ही मानवता का धर्म एवं प्रजातंत्र का विकास होता है। वर्तमान मानव समाज इसी स्तर में है।

अगस्त काम्ट ने इन तीन स्तरों के सिद्धान्त का सामाजिक जीवन पर लागू कर समाज के उद्‌विकास की प्रक्रिया को सहज ढंग से समझाने का प्रयास किया है। वस्तुतः तीन स्तरों का नियम सामाजिक परिवर्तन की आरंभिक व्याख्या है, जिसमें विचार को एक मुख्य कारक माना गया है।

मार्गन ने सांस्कृतिक परिवर्तन तथा परिवार में परिवर्तन को उद्‌विकास के संदर्भ में समझाया है। इनके अनुसार सांस्कृतिक विकास तीन स्तरों से होता हुआ वर्तमान अवस्था में आयी है। इस ृंखला

में आदिमकाल पहला था। इसके बाद बर्बरता काल आया और अन्त में सभ्यता का काल आया। आदिमकाल में मानव जंगलों में घूमता-फिरता था। व्यवहार आदि में पशुओं के समान था। उसे किसी प्रकार की भाषा का ज्ञान नहीं था। बर्बरता काल में मानव टूटी-फूटी भाषा का प्रयोग करने लगा था। परन्तु एक स्थान पर रहने की कला अभी तक विकसित नहीं हुई थी। सभ्यता के काल में तनाव भाषा का प्रयोग करने लगा। एक स्थान पर बसने की कला का भी विकास इसी काल में हुआ। मार्गन के अनुसार उद्‌विकास भी यह अंतिम कड़ी है। इसी प्रकार मार्गन ने परिवार के विकास की चर्चा अनेक स्तरों में की है और यह विचार दिया है कि परिवार का प्राथमिक रूप रक्तमूलक परिवार या जो समूह विवाह परिवार, युगल परिवार तथा पितृसत्तात्मक परिवार से होता हुआ एक विवाही परिवार में विकसित हुआ।

स्पेन्सर ने भी सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या उद्‌विकासीय प्रक्रिया के आधार पर की है। इसके अनुसार हमारा समाज चारागाह की स्थिति से शुरू होकर पशुपालन आदि स्थिति को पार करता हुआ औद्योगिक समाज में आ गया है।

उद्‌विकासीय सिद्धान्त की कुछ कमजोरियाँ हैं जिसके कारण इसकी आलोचना की जाती है। इसकी मुख्य आलोचना निम्नलिखित है-

1. इस सिद्धान्त के समर्थकों ने उद्‌विकास, परिवर्तन और प्रगति में कोई अवधाराणात्मक अन्तर नहीं माना है।

2. यह सिद्धान्त भूत के द्वारा वर्तमान की व्याख्या करता है जो अवैज्ञानिक है।

3. उद्‌विकासीय सैद्धान्तिक परामपरा ने प्रसारवाद को महत्व नहीं दिया है। जबकि प्रसार के माध्यम से भी प्रसार संभव है। कोई परिवर्तन एक स्थान पर होता है और कालान्तर में वह दूसरे स्थान में भी प्रक्रिया के माध्यम से जाता है।